लो आ गया त्योहार अब क्या कहने

UNDER MOBILE LEARNING RESOURCE CENTER PROJECT
Innovative Educational Engagement for Children

unicef for every child

यूनिसेफ एवं बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना के सहयोग से
रोहिणी साइंस क्लब द्वारा संचालित प्रोजेक्ट के तहत् विकसित

COVID-19 कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के कारण मार्च 2020 से स्कूल बंद हैं। इस दौरान बच्चे घर पर हैं और इनकी पढ़ाई का ख्याल रखते हुए सरकार ने डिजिटल कंटेंट तैयार कर दूरदर्शन के माध्यम से लगातार प्रसारित करने की कोशिश की है। इस दौरान WhatsApp जैसे सोशल मिडिया प्लेटफार्म का भी बच्चों की पढ़ाई के लिए प्रयोग में लाया गया।

इस दिशा में किये गए प्रारंभिक प्रयासों ने कुछ उम्मीद बांधी है। इससे बच्चों में "सीखने" के प्रति दिलचस्पी बढ़ी है जो उनके ज्ञानवर्धन में भविष्य में सहायक भी हो सकता है। इस क्रम में एक नई सम्भावना जो दिख रही है वह है "थीम बेस्ड लर्निंग" अर्थात "घर पर रहकर सीखना"। हम सभी जानते है कि बच्चे घर पर हो या स्कूल में, वे हमेशा कुछ न कुछ सीखते जरुर हैं। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से घर की सम्पूर्ण गतिविधियों को देख रहे हैं – उनके लिए "घर" कुछ नया सीखने के लिए बेशुमार अवसर देता है। इसी विषयवस्तु को लेकर एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसके अंतर्गत दस थीम (विषयवस्तु) का चयन किया गया है जिसके सम्बन्ध में विस्तार से अलग–अलग थीम पुस्तिकाओं में आप शैक्षिक सामग्री देख सकेंगे।

हमारी कुछ भ्रांतियाँ भी है जिसे स्पष्ट करना जरूरी है।

➡ COVID में स्कूल बंद है तो क्या बच्चों का 'सीखना' भी बंद है? जी नहीं। बच्चे घर पर रहकर भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

➡ घर पर किताब–कॉपी लेकर बच्चे नहीं बैठे हैं इसलिए 'सीखना' संभव नहीं है। यह बात भी सही नहीं है। सीखने के लिए हमेशा किताब व् कॉपी को होना जरूरी नहीं है।

➡ खेलते बच्चे, सिर्फ खेलते हैं, सीखते कुछ नहीं, यह भी बात सही नहीं है। खेलते हुए भी बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं जो उनके जीवन में काम आता है, जैसे – टीम भावना से खेलना, हार को स्वीकार करना, चुनौती लेना आदि।

➡ गीत गाते, नाचते–कूदते, दौड़–भाग करते, बच्चे कुछ सीखते नहीं हैं, यह बात भी सही नहीं है। खेलने–कूदने से बच्चों में शारीरिक चपलता और स्फूर्ति पैदा होती है जो तंदरुस्त और खुशमिजाजी बने रहने में सहायक होता है।

इसलिए कहा जाता है – सीखना एक जन्मजात प्रवृति है। हम कहीं भी रहकर सीख सकते हैं। हर परिस्थिति से कुछ सीख सकते हैं। हाँ, स्कूली पाठ्यक्रम से इसका कितना अंश जुड़ा है यह तय करने की हमें जरूरत है।

प्रश्नोतर

1. हमारे देश में अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग तरह के त्योहार मनाये जाते हैं। ऐसे ही किन्ही पाँच त्योहारों के नाम लिखें।
2. त्योहारों में सबसे अच्छा आप को क्या लगता है?
3. त्योहारों में बनाये जाने वाले कुछ प्रमुख खान–पान / पकवान के नाम लिखें।
4. हमारे देश के किस राज्य के त्योहार के दौरान समुद्र में नाव चलाकर प्रतियोगिता की जाती हैं?
5. पहले और अभी के त्योहार मनाने में क्या नई बात आपको दिखती हैं?
6. हमारे देश में त्योहारों में मेले का भी रिवाज है। कभी मेले में घूमे हो तो उसका अनुभव बताएं।
7. निम्न प्रश्नों का सही और गलत चिह्न लगाकर उत्तर दें।
   - ★ त्योहार से लोगों में प्रेम बढ़ता है ☐
   - ★ गरीबों के लिए त्योहार नहीं है ☐
   - ★ त्योहार में अच्छे कपड़े नहीं पहने जाते हैं। ☐
   - ★ एक दूसरे के त्योहारों का सम्मान करना चाहिए ☐
   - ★ त्योहारों से पैसे बर्बाद होते हैं ☐
8. किन्हीं 4 क्षेत्रीय त्योहारों का नाम बताएं।
9. किसी राष्ट्रीय / क्षेत्रीय मेले का नाम / स्थान लिखें।
10. मेले में खाने की कौन–कौन सी चीजें मिलती है, लिखें।
11. मेले में किसी झूले में बैठकर झूलने का अपना अनुभव लिखें।
12. मेले में क्या–करना और क्या नही करना चाहिए, लिखकर बताएं।

थीम बेस्ड लर्निंग

'थीम बेस्ड लर्निंग' के अंतर्गत हम यहाँ उन विषयों को ले रहे हैं जो हमारे घर और दैनिक क्रियाकलापों एवं गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। इसके माध्यम से बच्चों को उनकी रचनात्मकता और विचारों का बेहतर उपयोग करने का अवसर मिलता है। बच्चों में इस दौरान चीजों को एक नई दृष्टि से देखने, उसमें नवीनता की खोज करने, उनको मूर्त रूप देने, डिजाइन करने के साथ–साथ उससे सम्बंधित सामग्री को पढ़ने व उस विषय पर लिखने जैसी एक नई प्रवृति के पनपने की भी सम्भावना है। आगे चलकर इस सीख को बच्चे अपने समुदाय व स्कूल में प्रस्तुत भी कर सकेंगे। हम अपने घर की सभी गतिविधियों को अगर गौर से देखे तो पाएंगे कि उसमें ढ़ेर सारी सीखने की सम्भावना है। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से यह सब कुछ देख रहे हैं, बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं एवं अपने परिवारजनों को मदद भी कर रहे हैं– उनके लिए "घर" सीखने के बेशुमार अवसर देता है। घर की गतिविधियों पर अगर हम एक नजर डालते हैं तो देखते हैं कि वहाँ – भोजन की व्यवस्था, साफ–सफाई, नहाना–धोना, कपडे साफ करना, छोटे बच्चों की देख–रेख, बाजार का काम, पशुओं की देख–रेख, कृषि कार्य, जैसे बहुत से काम होते हैं।

बच्चे अपने आस–पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। कभी देखकर, कभी अनुसरण कर, कभी बोलकर, कभी सुनकर, कभी अभ्यास कर तो कभी उपयोग कर आदि। कई तरीकों से बच्चे सीखते रहते हैं। लोगों से अंतःक्रिया कर अपने अनुभवों के आधार पर वह समझदारी हासिल करते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया उनके व्यवहार में परिवर्तन के पूर्व होती है। इसलिए कहते हैं 'सीखना' बार–बार अभ्यास का परिणाम है।

आज COVID-19 महामारी की स्थिति के कारण, घर पर लंबे समय तक रह गए बच्चों की रुचि और उनकी मानसिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए इन सामग्रियों को तैयार करने की कोशिश की गई है। बच्चों को मौजूदा हालातों में खुश रहने, खेलने–कूदने के साथ–साथ पढाई में भी रूचि पैदा करने के लिए यह एक जरिया बन सकता है।

आइये, देखते हैं सीखने के लिए क्या–क्या जरूरी है :–

- बच्चे उस वातावरण में बेहतर सीखते हैं जब उन्हें लगता है कि वे महत्वपूर्ण हैं।
- बच्चे सक्रिय भागीदारी से सीखते हैं।
- बच्चे स्वयं प्रयोग करते हुए सीखते हैं।
- बच्चे बातचीत, अंतःक्रिया और विवेचना से सीखते हैं।
- बच्चे अपने अनुभवों से सीखते हैं।
- बच्चे पूर्वज्ञान के साथ जोड़कर सीखते हैं।
- बच्चे सवाल पूछ कर, जाँच–परख कर सीखते हैं।

हम सभी जानते है कि सीखना अपने आप में एक सक्रिय व् सामाजिक गतिविधि है। कैसे सीखना है, यह भी एक सीख है (Learning to Learn) बच्चे सीखने के क्रम में तब सीखेंगे जब :–

- बच्चे चिंतनशील बनेंगे।
- बच्चे खोजी प्रवृति के बनेंगे।
- बच्चे सृजनशील कार्य में रुचि लेंगे।
- नए कार्यों को करके आजमाएंगे।
- जोड़–तोड़ कर समस्या का हल निकालना सीखेंगे।
- अपनी गलतियाँ खुद सुधारेंगे।
- गलती के डर से पहल नहीं करना, जैसी मानसिकता से उभरेंगे।
- असफलताओं से ही सफलता की कहानी लिखी जाती है, यह जानेंगे।

होम बेस्ड लर्निंग, शिक्षकों को भी स्कूल के बच्चों के संरक्षक के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करेगा ताकि वे बेहतर सीख के साथ कल जब स्कूल खुलेंगे तब अपना कक्षा विनिमयन कर सकेंगे। इसी प्रकार माता–पिता और अभिभावक भी होम बेस्ड लर्निंग की अवधारणा को बच्चों की आवश्यकता और आकांक्षाओं से जोड़ कर देख सकेंगे। उम्मीद है कि वे बच्चों को घरों में एक बेहतर 'सीखने का माहौल' देने में सक्षम होंगे जिससे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बच्चों का एक अच्छा तालमेल बना रहे।

याद करते हैं इस दिन देश की राजधानी दिल्ली में बड़ा कार्यक्रम होता है। यहाँ प्रधानमंत्री लालकिले पर तिरंगा फहराते हैं। इस दिन प्रधानमंत्री देश के नाम संदेश देते हैं। उसमें अब तक देश में हुए विकास तथा योजनाओं के बारे में बताया जाता है। ऐसे ही कार्यक्रम राज्यों की राजधनियों और जिलों में भी मनाए जाते हैं। स्कूलों में भी स्वतंत्रता–दिवस समारोह मनाया जाता है।

गणतंत्र-दिवस

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाया जाता है। सन् 1950 में इसी दिन हमारे देश का संविधान लागू हुआ, जिसमें भारत को एक गणतंत्र घोषित किया गया।

हम 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हो गए थे। इससे पहले देश पर अंग्रेजों का शासन था। हम 1947 में स्वतंत्र हो गए। बाद में हमारा अपना संविधान बना। संविधान वह किताब है, जिसमें देश का शासन चलाने के नियम कानून दिए गए हैं। यह संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। इस दिन दिल्ली में राष्ट्रपति इंडिया गेट पर तिरंगा फहराते हैं। फिर परेड होती है। राष्ट्रीय परेड की सलामी लेते हैं। यह राष्ट्रपति भवन से लाल किले तक होती है। इसके बाद रंग–बिरंगी झाँकियाँ निकलती हैं। इनमें अलग–अलग राज्यों की संस्कृति की झाँकियों के साथ–साथ देश की सैन्य–शक्ति का प्रदर्शन करके जनता का मनोबल बढाया जाता है। राज्यों की राजधानियों में भी गणतंत्र–दिवस के कार्यक्रम होते हैं। जिलों में भी गणतंत्र'दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। स्कूलों में इस दिन कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

गांधी जंयती

गांधी जयंती 2 अक्टूबर को मनाई जाती है। इसी दिन सन् 1869 को महात्मा गांधी का जन्म हुआ था। गांधीजी को हम राष्ट्रपिता कहते हैं। गांधीजी ने हमें सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। सत्य और अहिंसा के बल पर ही उन्होंने देश को आजादी दिलाई। गांधीजी की समधि दिल्ली में राजघाट पर है। गांधी जंयती के दिन लोग गांधीजी की समाधि पर जाते हैं। वहाँ फूल चढ़ाते हैं। रामधुन गाते हैं। चरखा भी चलाते हैं। इस दिन राष्ट्रीय अवकाश होता है।

जानियें

हमारा देश त्योहारों का देश कहा जाता है। यहाँ हर धर्म के अपने–अपने त्योहार हैं। पर सभी धर्मो के लोग मिल–जुलकर इन्हें मनाते हैं। हमारे कुछ त्योहार ऐसे हैं, जो खेती से जुड़े हैं। फसल कटने के बाद ये त्योहार देश के सभी हिस्सों में मनाए जाते हैं। अलग–अलग इलाकों में ये त्यौहार अलग–अलग नामों से जाने जाते हैं। त्योहार चाहे किसी भी धर्म के हों, किसी भी इलाके में मनाए जाते हों, किसी भी नाम से जाने जाते हों, संदेश सबके एक से ही हैं–भाईचारा, प्रेम, सेवा, खुशी बुराई पर अच्छाई की जीत।

मकर संक्राति, होली, ईद–उल–फितर, गुरूपर्व (गुरू नानक जंयती), दुर्गा पूजा और दशहरा, दीपावली, क्रिसमस ये सभी हमारे सामाजिक त्योहार हैं। ये अलग–अलग धर्मो के त्योहार हैं, पर सब मिल–जुलकर इन्हें मनाते हैं। इसी तरह के कई और त्योहार भी हमारे यहाँ मनाए जाते हैं। इनमें दो खास त्योहार हैं–महावीर जंयती और बुद्ध पूर्णिमा। महावीर जंयती भगवान महावीर के जन्म दिन के रूप में मनाई जाती है। भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थकर थे। वे अहिंसा को सबसे बड़ा धर्म मानते थे।
बुद्ध पूर्णिमा को भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था। भगवान बुद्ध से बौद्ध धर्म की शुरूआत हुई। भगवान बुद्ध ने दुनिया को करूणा और भाईचारे का संदेश दिया।

कुछ त्योहार ऐसे भी हैं, जिन्हें हम राष्ट्रीय पर्व कहते हैं। ये किसी एक धर्म के त्योहार नहीं हैं। पूरा देश साथ मिलकर इन्हें मनाता है। हमारे तीन राष्ट्रीय पर्व हैं–1.स्वतंत्रता दिवस 2. गणतंत्र–दिवस और 3. गांधी जंयती।

स्वतंत्रता-दिवस

स्वतंत्रता–दिवस 15 अगस्त को मनाया जाता है। सन् 1947 को इसी दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ था। इससे पहले हमारे देश पर अंग्रेजों का शासन था। देश को स्वतंत्र कराने के लिए हमें बहुत संघर्ष करना पड़ा। देश के कई सपूतों को बलिदान देना पड़ा। स्वतंत्रता–दिवस के मौके पर हम इन बलिदानियों को

लो आ गया त्योहार, अब क्या कहने

हमारे देश में कई त्योहार हैं और यह सिलसिला जनवरी से शुरु होकर दिसम्बर तक चलता रहता है। कुछ महीनों में ज्यादा, तो कुछ में कम लेकिन त्योहारों में उल्लास और खुशी का इजहार सबसे प्रमुख होती है। कई त्योहार ऐसे हैं जो समाज के सभी लोग अधिकांशतः साथ मनाते हैं–जैसे होली, दिवाली आदि। त्योहारों में नये कपड़े मिलने की संभावना बच्चों में उत्साह भर देती है। अलग–अलग तरह के पकवान और साज–सज्जा त्योहारों की खास पहचान होती है। त्योहारों में छोटे, बड़ों का आर्शीवाद लेते हैं और बड़े, बुजुर्गो का। हमारे देश में बाजारों की रौनक भी बढ़ जाती है। इन दिनों बड़े–बड़े उद्योग भी त्योहारों पर अपनी नजर बनाये रखते हैं। इन अवसरों का लाभ लेकर वे बाजारों में नई–नई तरह की चीजें उपलब्ध कराते हैं। आइये, आज हम इन्ही विषयों के इर्द–गिर्द रहकर अपनी बातचीत करेंगे। बातचीत के साथ–साथ कुछ काम भी करेंगे जिससे आप के अंदर विषयवस्तु की समझ बढ़ेगी और नये कौशल से आप समृद्ध होंगे।

गीत/कविता

होली

होली आई, होली आई
शोर मचाती टोली आई
लाल, पीला, हरा, गुलाबी
रंग घोल कर बारी–बारी
भर–भर छोड़ते पिचकारी
होली आई, होली आई।

क्रिसमस

लो फिर आया क्रिसमस,
मना ईसा का जन्मदिवस।
देखो चर्च की शान निराली,
लगता जैसे हो आज दिवाली।
सांताक्लाज आया है,
ढेरों तोहफे लाया है।
बच्चों में बाँटे उपहार,
सब पर छाया है खुमार।
क्रिसमस आता खुशियाँ लाता,
नन्हों के दिलों को भाता।

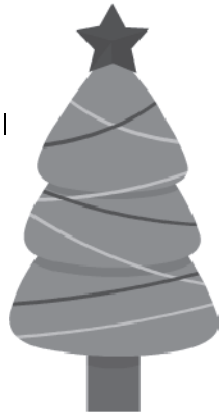

दिवाली

दीप जलाएँ, दीप जलाएँ, आज दिवाली रे।
हँसी–खुशी सब नाचें–गाएँ, आज दिवाली रे।
मैं तो लूँगा खेल–खिलौने, तुम लेना फुलझड़ियाँ।
बना घरौंदे उन्हें सजाएँ, ले फूलों की लड़ियाँ।
छोड़ें खूब पटाखे मिलके, आज दिवाली रे।
दीप जलाएँ, दीप जलाएँ, आज दिवाली रे।

आज दुकानें सब सजी हैं, घर–घर करते जगमग।
पोखर के पानी में जैसे, तारे करते झिलमिल।
खाएँ खूब मिठाई हिलमिल, आज दिवाली रे।
दीप जलाएँ, दीप जलाएँ, आज दिवाली रे।

नाम बताएं। इसके बाद आप अपनी पसन्द या दोस्तों की सर्वाधिक पसन्द के किसी एक त्योहार को कैसे मनाते हैं, कब मानते हैं, उसके पीछे की पौराणिक कथा या धारण क्या हैं उसके बारे में बताने को कहें। सभी दोस्तों को मौका दें ताकि वे रोचक तरीके से वर्णन कर सकें।

इसके बाद किसी एक त्योहार को लेकर सभी दोस्त बारी–बारी से उसे मनाने की प्रक्रिया के संबंध में एक–एक वाक्य बोलेगें। ये वाक्य बहुत छोटी हों। जैसे–क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं, क्या पहनते हैं, तुम्हें कैसा लगता है? आदि।

इसके बाद किसी त्योहार का नाटक/खेल सब मिलकर खेल सकते हैं। इनमें सारा समूह एक परिवार व छोटा –सा पड़ोस बन जाए, जिसमें मुख्य पात्रों की भूमिका आप व आपके दोस्त निभाएं, लेकिन मौका सभी दोस्तों को दें। ये सब दोस्तों की पूर्ण सहमति से हों, तो ज्यादा अच्छा है।

2. किस राज्य का कौन त्योहार, मिलान कर दिखाएं।

तमिलनाडु	लोहड़ी
असम	सरहुल
केरल	पोंगल
पंजाब	बीहू
झारखण्ड	ओणम

3. त्याहारों में नृत्य-संगीत सामान्य है। चलिये देश के कुछ राज्यों के नृत्य से हम उस राज्य की पहचान करने की कोशिश करेंगे :-

नृत्य	राज्य
गरबा	
चांग लो	
भांगड़ा	
छऊ	
भरतनाट्यम्	

☆ कढ़ाई करके अथवा रंग कर आंखें बनाइए। बड़ी आखों वाली कठपुतली अधिक प्रभावी लगती है। नाक बनाने के लिए भरे हुए मोटे कपड़े का प्रयोग किया जा सकता है। रूई की थोड़ी बड़ी नाक भी बनाई जा सकती है, लेकिन वह पात्र के अनुसार होनी चाहिए।

☆ सिर के ऊपर बाल ऊनी धागों सूती धागों या इसी प्रकार की दूसरी सामग्री द्वारा बनाये जा सकते हैं। मनुष्य चरित्रों में व्यवसाय और आयु के अनुसार मूछें भी इसी प्रकार लगाई जा सकती हैं।

☆ अब इस कठपुतली का उपयोग किसी कहानी या कविता में करके देखिये और अपने दोस्तों को भी दिखाएं।

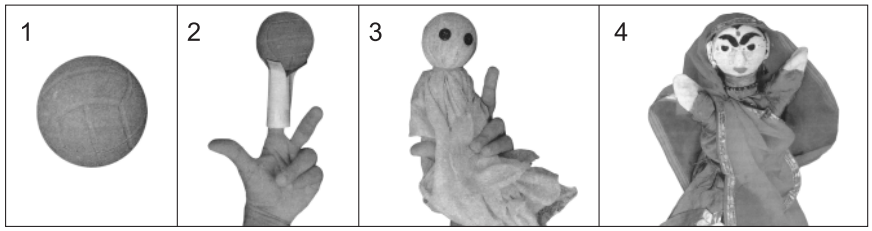

टार्च से नये रंग बनाना सिखिये।

एक टार्च और पारदर्शी कागज की सहायता से कुछ नये रंग बनायेंगे। इसके लिए हम सेलोफिन कलर पेपर जो पतला, रंगीन और पारदर्शी होता है, लेंगे और उसे एक दूसरे रंग पर रखकर देखेंगे कि नये रंग किस–किस की सहायता से बनते हैं।

इसके लिए बैटरी टार्च के सामने रंगीन सेलोफिन पारदर्शी कागज को लगाकर उसकी रोशनी के रंग को बदलते हुए दीवार पर देख सकते हैं। कागज पर पेटिंग करते वक्त भी हम यह तरीका अपना सकते हैं।

खेल

त्योहारों पर चर्चा

सर्वप्रथम आप अपने सभी दोस्तों को गोल घेरे में बैठाएं और उनसे बारी–बारी से पूछें कि किसको कौन–सा त्योहार सबसे ज्यादा अच्छा लगता है और वे उसका

झंडा

तीन रंग का अपना झंडा,
हम झंडा फहराते हैं।
इसे तिरंगा कहते हैं हम,
इसका गाना गाते हैं।

इसे देखते हैं जब भी हम,
कितना खुश हो जाते हैं।
इस ढंडे को हमसब मिलकर,
अपना शीश झुकाते हैं।

ईद

सब्र करो सब्र करो
सब्र बड़ी चीज है
आज रात को चाँद दिखेगा
कल सवेरे ईद है।

पहेली

1. ऐसा भी क्या खेल जो कर दे बेमेल
   गोरे को काला, काले को गोरा
   खेल खत्म तो हो जाये मेल। (ताश)

---

2. एक ऐसा भी दिन आता है
   जब बिजली को गुम होना होता है
   फिर भी दुनिया जगमगाती है
   क्यों वह इतना लोगों को लुभाती है। (दीवाली)

3. सवेरे–शाम ठंड को सहकर
भूखे–प्यासे भींगे कपड़ों में रहकर
तुम्हारी शक्ति का भरपूर एहसास कर
हर साल याद आते हो रह–रहकर। छठ

---

4. चाँद देखकर खुश हो जाते
एक दूजे को गले लगाते
मीठी सेवई और मिठाई
कौन हूँ मैं बोलो तो भाई। ईद

---

5. क्रिसमस ट्री और सन्ता क्लोज आया
बहुत सारे खिलौने और उपहार लाया
सबने मिलकर जश्न मनाया
कौन सा त्योहार कहलाया। क्रिसमस

---

6. तीन रंग का झंडा अपना
हम इसको फहराते हैं।
नाम बताओ इन रंगो का
जिसे गर्व से लहराते हैं। केसरिया, सफेद, हरा

---

7. कूटी जाती, पीसी जाती,
खाने में पीला रंग लाती।
तेल में मुझे मिलाकर दादी,
चोट लगे तो झट से लगाती।
सबकी चोट को ठीक कराती,
इसीलिए मैं सबको भाती।
सोचो, सोचो कौन हूँ मैं,
जल्दी बोलो, कौन हूँ मैं? हल्दी

आओ एक मजेदार दर्पण पहेली बनाएं

प्रकृति में तमाम तरह के नमूने हैं। तितली के पंख ही लो। एक पंख दूसरे के ऊपर जमाकर रखा जा सकता है। इस तरह तितली का शरीर समता की अक्ष बन जायेगा।

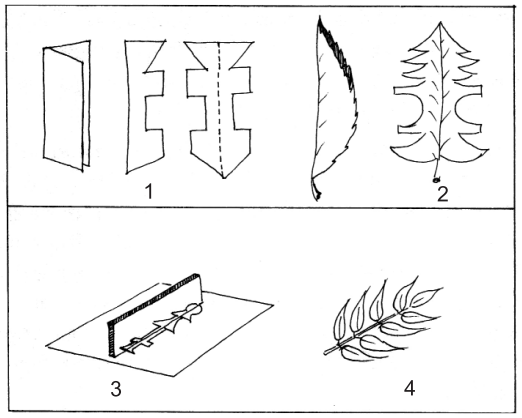

एक कागज को बीच में मोड़ों। अब उसके सिरों को इकट्ठा काटो। कागज को खोलने से एक नमूना दिखेगा चित्र (1)।

इसमें कौन सी समता की अक्ष है? इसके लिये तुम पत्तियों का भी इस्तेमाल कर सकते हो चित्र (2)।

इस तरह खूब सारे नये नमूने बनाओं।

किसी एक आकृति पर दर्पण खड़ा करो जिससे उस आकृति का पूरा प्रतिबिम्ब दर्पण में दिखे चित्र (3)।

ऐसी पत्तियाँ खोजो जो दुगनी बनी दिखें चित्र (4)।

कठपुतली बनाएं और खेल दिखाएं

- ☆ हल्की प्लास्टिक की एक गेंद लीजिए।
- ☆ अंगुली के लिए उसमें एक छिद्र बनाइए।
- ☆ एक कड़ी नली जो पतले बोर्ड अथवा कागज की कई परतों को एक दूसरे पर चिपका कर बनाई गई हो, उसके अन्दर ले जाइए। यह नली, कठपुतली के सिर को घूमाने में मदद करेगी।
- ☆ मोटे कपड़े से सिर ढँक दीजिए। पुराने मोजें इस काम के लिए ठीक रहेंगे।
- ☆ खुले हुये सिरे को नली के साथ कपड़े से बाँध दें।
- ☆ अब सिर के ऊपर चेहरा बनाइए।

त्योहारों की छुट्टियों में बच्चे ''मूक सिनेमा'' बनाएं

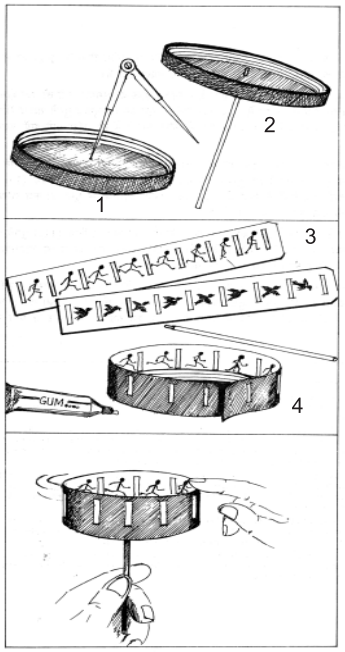

एक सुलगती माचिस की तीली को हाथ में लेकर अंधेरे कमरे में नचाओ। क्या तुम्हें प्रकाश के अलग–अलग बिंदु दिखते हैं? नहीं। तुम्हें प्रकाश एक वक्र रेखा के रूप में दिखेगा। अगर तुम चाहों तो अपने हाथ को तेजी से घूमाकर कई तरह के नमूने बना सकते हो। एक ऐसी चित्र पुस्तक बनाओं जिसमें एक ही चित्र अलग–अलग पन्नों पर क्रमवार बदलता हो। अब चित्र पुस्तक के पन्नों को तेजी से छोड़ो। तुम्हें लगेगा कि चित्र गतिशील है और तुम एक मौन सिनेमा देख रहे हो।

मूक फिल्म बनाने का एक और मजेदार तरीका है। 10 सें. मी. व्यास का प्लास्टिक का एक ढक्कन लो और उसके केंद्र में डिवाईडर से छेद कर दो चित्र (1)।

इस छेद में बालपेन की पीतल की नोक घुसाओ चित्र (2)।

ढक्कन को नोक पर आसानी से घूमना चाहिये। एक मोटे कागज की पट्टी लें जो ढक्कन की परिमिति से थोड़ी लंबी हो। पट्टी पर क्रमवार बदलते चित्र बनाओ। इन चित्र के बीच लंबी खड़ी खिड़कियाँ काटो चित्र (3)।

पट्टी को ढक्कन के किनारे पर चिपका दो। ध्यान रहे की चित्र वाली सतह अंदर की ओर हो चित्र (4)।

ढक्कन को रीफिल की नोक पर घुमाने पर तुम्हें एक गतिशील फिल्म दिखाई देगी। तुम चाहो तो एक बच्चे को दौड़ा सकते हो या चिड़िया को उड़ा सकते हो।

पट्टी को बाहर से काला रंग देने से अंदर की फिल्म अधिक स्पष्ट दिखेगी। कोशिश कर इसे बनाओ और दोस्तों को दिखाओं।

कहानी

दशहरे का मेला

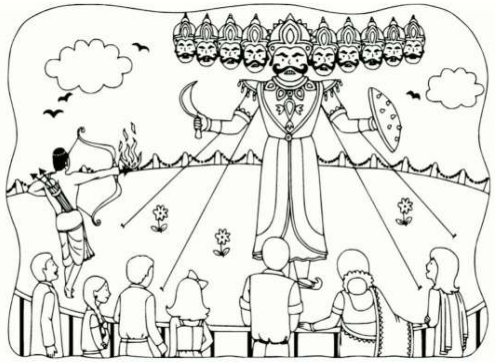

आज दशहरा है कई दिनों से रामलीला हो रही है शहर में बहुत बड़ा मेला लगा है।

कमला और मदन पिताजी के साथ मेला देखने जा रहे हैं। मदन की कक्षा में एक नया लड़का आया है। उसका नाम ज्ञान है। ज्ञान की छोटी बहन का नाम रक्षा है। रक्षा और ज्ञान भी मदन के साथ मेला देखने गए।

पिताजी बोले–देखो, मेले में कितनी भीड़ है। बहुत से लोग मेला देखने आए हैं। कुछ लोग बैलगाड़ियों से आए हैं। कुछ बसों में आए हैं। वह देखो, रावण का पुतला देखो, कितना बड़ा है। मेले में बहुत–सी दुकानें लगी थी। बच्चे खिलौने खरीद रहे थे। कमला ने राम का चित्र खरीदा। मदन ने एक धनुष लिया। उसने धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ा बाण कुछ दूर पर जा गिरा। ज्ञान दौड़कर बाण उठा लाया।

पिताजी बोले–देखो, राम और रावण की लड़ाई हो रही है। वे धनुष–बाण से लड़ रहे हैं।

राम ने रावण के पुतले पर बाण चलाया। पुतले मे आग लग गई। उसमें से पटाखे छूटने लगे। सब लोग खुशी से तालियाँ बजाने लगे।

पिताजी ने सबके लिए मिठाई खरीदी। सबने मिलकर मिठाई खाईं फिर वे खुशी–खुशी घर की ओर चल पड़े।

ईद

कल ईद की छुट्टी है। बच्चे बहुत खुश हैं। स्कूल से लौटते हुए रजिया ने राधा से कहा, ''अम्मी कहती हैं, रमजान का महीना खत्म हो गया।''

राधा ने पूछा, ''रमजान का महीना क्या होता है?''

रजिया ने कहा, ''रमजान हमलोगों का नौवाँ महीना होता है। इस महीने में दिन भर लोग न खाना खाते हैं और न पानी पीते हैं। सूरज डूबने पर ही कुछ खाते–पीते हैं। महीने के अंत में महीना खत्म होने पर ईद का चाँद दिखाई देता है।''

राधा ने कहा, ''अच्छा, तो ईद का चाँद कब दिखाई देगा?''

रजिया बोली, ''आज चाँद दिखाई देगा। कल बड़ा मजा आएगा, हम नए कपड़े पहनेंगे। अब्बा–अम्मी हमें ईदी देंगे।''

राधा ने पूछा, ''ईदी क्या होती है?''

रजिया ने बताया, ''ईद के दिन सभी बड़े अपने से छोटों को कुछ पैसे देते हैं। इसे ही ईदी कहते हैं। हम ईदगाह जाएँगे। वहाँ के मेले से बैलून और खिलौने लेंगे। अब्बा और भाईजान के साथ सबके घर जाएँगे। उन्हें 'ईद मुबारक' कहेंगे। उनके गले मिलेंगे। तुम भी मेरे घर आओगी न?''–रजिया ने राधा से पूछा।

''हाँ, हाँ जरूर।''–राधा ने कहा।

दूसरे दिन पिताजी के साथ राधा रजिया के घर गई। राधा को देखकर रजिया बहुत खुश हुई। दोनों के पिता गले मिले। राधा ने सबको 'ईद मुबारक' कहा। रजिया और राधा ने साथ–साथ सेवई खाई।

''इतनी स्वादिष्ट सेवई तो मैंने कभी नहीं खाई थी।''–राधा ने कहा।''

और, होली में तुमने जो मालपुए खिलाए थे, वे भी तो बहुत स्वादिष्ट थे।''–रजिया ने कहा।

दोनों सहेलियाँ हँस पड़ीं। चलते समय रजिया की अम्मी ने राधा को ईदी दी। घर के लिए सेवई भी दी।

करके सीखें

त्योहार में ''घूमता फुहारा'' बनाएं

एक जग या पानी का भरी हुई बोतल, रबर की एक या डेढ मीटर लम्बी प्लास्टिक नली ले लें।

विधि-

- ☆ पानी से भरी जग या बोतल में रबर नली का एक सिरा डालकर मुंह से नली के दूसरे सिरे से पानी खींचे।
- ☆ पानी साइफन विधि द्वारा नली से नीचे गिरने लगेगा। अब नली के जिस सिरे से पानी बाहर आ रहा है, उस सिरे को पकड़ कर हाथ से धीरे–धीरे चारों तरफ घुमाते हुए ऊपर की तरफ ले जाइए और जोर–जोर से नली को घुमाते रहिए।
- ☆ ध्यान रहे कि नली का बोतल वाला सिरा घुमाते समय पानी से बाहर न निकलने पाए।
- ☆ क्या पानी नली को घुमाते समय ऊपर जा रहा है? ऐसा क्यों होता है? कारण सोचें और चर्चा करें।
- ☆ अब नली को बिना घुमाए ऊपर रखिए।
- ☆ क्या पानी अब भी ऊपर की ओर चढ़ रहा है?
- ☆ बनाइये इस खिलौने को और अपने दोस्तों को दिखाएं।